

गुरुवाणी

कहते तो सभी है कि हम इस संस्था के भक्त हैं, हम इस संस्था के अनुयायी हैं हम इस संस्था के बहुत कुछ हैं लेकिन जब वक्त आता है, समय आता है तो सब टाय-टाय फिस्स हो जाता है।
-पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी



अधोरेश्वर निनाद

अधोरान्नाऽपरो मन्त्रो नास्ति तत्वम् गुरोः परम्।

R.N.I.UPHIN-2000/3008 Postal No-G-2/VSI (E)-04/2016-18

युग-उद्धारक मुनि विज्ञानी। बाबा गौतम औघड़ दानी।।



वर्ष-१६, अंक ६, वाराणसी।

गुरुवार ३१ मार्च २०१६ ई०

सहयोग राशि ४.२५

प्रकृति ने अपने सबसे उत्कृष्ट रचना मानव को जिस अमूल्य थाती से सुसम्पन्न बनाया है नवाजा है, वह है, समय। समय मानव जीवन यात्रा की अमूल्य, उत्कृष्ट, अलौकिक धरोहर है, जिसके सदुपयोग एवं दुरुपयोग पर उसके जीवन-खजाना की सम्पदा निर्भर करती है। समय को काल, अवधि, क्षण वर्तमान चाहे जो भी कह लें पर प्रतिक्षण व्यतीत होता, अनवरत, अनन्त काल से चले आ रहा बेजुबान गतिमान समय के अधीन ही यह मानव जीवन है। माँ के गर्भ से लेकर मृत्युपर्यन्त मनुष्य समय के ही प्रभाव में अपने रूप, स्वरूप में परिवर्तन पाता है तथा अबोध अवस्था, बोध अवस्था, जवानी, बुढ़ापा, जरावस्था सभी अवस्थायें समय की ही देन हैं। कल अबरपति का आज खाकपति तथा कल के दरिद्र को अरबपति के रूप में ख्याति पाना समय का ही तकाजा है। साधारण बालक समय की गोद में परिष्कृत होकर असाधारण प्रतिभा से युक्त होकर समाज में अपनी प्रसिद्धि फैला देता है। समय और मानव का सम्बन्ध शरीर और प्राण सरीखा है, जिसने अपने जीवन में समय का कद्र किया है, पहचाना है, इसके महत्व को सर-आँखों पर रक्खा है या जिसके अभिभावक अपने पाल्य को समय नष्ट करते नहीं देखना चाहते, वे निरन्तर उनके जीवन में विकास के ईंटें रखते चले जाते हैं तो एक दिन उनके पाल्य भव्य व्यक्तित्व के स्वामी बन जाते हैं। सर्वाधिक महत्वपूर्ण होते हुए भी विडम्बना यह है कि अधिकांश मनुष्य अपने इस असाधारण अमूल्य निर्धारित धरोहर को अनजाने में बेरहमी से विनष्ट करते चले जाते हैं तथा अन्त में सिर धुन धुन कर पछताते हुए अपनी इह लीला समाप्त कर जाते हैं। क्योंकि समय तथा उसके गर्भ से निकले अवसर कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं करते बल्कि वे तो उन

समय

वायुवानों की तरह उड़ान भरते रहते हैं जिनके उड़ान का हर सेकेण्ड निर्धारित है। देर से आये हुए यात्रियों के लिए वे दिवास्वप्न सरीखे सिद्ध होते हैं इसीलिए पल-पल इस अमोघ निधि का इस्तेमाल करते रहना चाहिए एवं किसी अवसर को चूकना या समय का व्यर्थ गँवाना कभी प्रकृति द्वारा क्षम्य भी नहीं होता। समय एक ऐसा बलवान थाती है जिसका सम्मान करने हेतु हमें सदैव सतर्कता से उद्यत रहना चाहिए। समय अपने साथ स्वर्ण अवसर का उपहार लेकर प्रस्तुत होता रहता है परन्तु हम में से बिरले ही हैं जिन्हें उसकी पहचान होती है तथा स्वागत करने के लिये श्रमशीलता का पात्र बनकर आलिंगन हेतु तत्पर रहते हैं। समय का जो अंश व्यतीत हो जाता है वह अपनी प्रकृति के अनुसार आज तक लौट कर नहीं आया, इन्हीं क्षणों में से बनकर सिकन्दर महान, महान अशोक एवं जूलियस सिजर, नेपोलियन आदि ने समय की सार्थकता को सिद्ध किया है। साथ ही समय एवं काल के आगोश से आज तक कोई बच भी नहीं पाया। महर्षि, देवताओं तक को काल का ग्रास बनना पड़ा है। सतयुग, त्रेता, द्वापर कलियुग आदि समय एवं काल की गणना युग, युगान्तर, कल्प, कल्पान्तरों के माध्यम से की जाती है। एक निर्धारित समयावधि के लिए ही प्रत्येक प्राणियों यहाँ तक पेड़-पौधे में भी श्वसन, प्रश्वसन, प्रकाश सदा लेखन आदि की क्रिया चलती रहती है।

सिद्ध संत की यह वाणी आज भी प्रासंगिक है कि “आसपास योद्धा खड़े सभी बजावै गाल; माझ महल से ले चला करके काल काल” यानी समयोपरान्त एक क्षण भी इस धरा पर जीव या प्राणधारी जीवित नहीं रह सकता। समय की अवधि

किसी के लिये अपेक्षाकृत अल्प, किसी के लिये थोड़ी अधिक हो सकती है। इसीलिए इस मृत्युलोक में जीवन को समय का ही ध्यान रखते हुए क्षणभंगुर कहा गया है, क्षण का अर्थ यहाँ अत्यन्त शीघ्रता से बीतने वाला कालांश ही होता है। मनुष्य अपने अच्छे समय को अधिक अवधि तक व्यतीत करने के उपरान्त भी याद नहीं रखता। जबकि अल्पावधि तक ही सीमित भले हों, कष्ट को शारीरिक, मानसिक या आर्थिक पीड़ा को हम भूलकर भी नहीं भूल सकते एवं कहा जाता है कि मौत का बुलावा कब कहाँ से किस प्रकार आ जाये इसका कोई भरोसा नहीं होता, इसीलिए तो टालने को खतरनाक प्रवृत्ति मानते हुए कबीरदास जी का यह कथन है “काल करै सो आज कर, आज करै सो अब। पल में परलय हो होयेगी बहुरि करेगी कब?।। यानी दूसरे पल का ठिकाना वह इस तरह इस विचित्र अनवरत धावक समय की गोद में समस्त जगत ही साँस ले रहा है। प्रतिदिन प्रातः, दोपहर, शाम, रात्रि का आगमन परिवर्तित समय की ही अवस्थाओं को चित्रित करता है। बोध अवस्था आने पर जो मानव इस अद्भुत समय के क्षणों का सदुपयोग, सतकर्मों में परमार्थ में परहित में, सर्वे भन्तु सुखिनस की भावना से करते रहते हैं। उनके व्यक्तिगत जीवन में निराशा, कुंठा, अवसाद के प्रवेश की कतई गुंजाइश नहीं होती। वे समाज के युगदृष्टा की भाँति सहज रूप से निर्भीकता का अवलम्बन लेकर अपनी साख बनाते हैं तथा सिंह की भाँति मस्त, निर्द्वन्द्व जीवन-यापन करते हैं।

समय के महत्व को जो मनुष्य ज्ञात नहीं कर पाते वे अन्ततः पछताते ही रह

जाते हैं, क्योंकि जो अनजाने में या जानबूझकर समय को विनष्ट करता है, वह प्रत्यक्ष रूप से अपने आप को ही विनष्ट कर रहा होता है तथा उचित समय व अवसर पर कार्य न किया जाय, गाड़ी न पकड़ी जाय तो हमेशा के लिए ही हम चूक जाते हैं इसीलिए हर कार्य हेतु एक समय निर्धारित रहता है, जैसे परीक्षा का समय तीन घंटा या विशेष निर्धारित अवधि अथवा गाड़ी के छूटने का निर्धारित क्रम अथवा प्रतियोगिता परीक्षाओं में प्रतिभाग हेतु उम्र की एक अधिकतम सीमा जीवन का चाहे कोई भी क्षेत्र है, जिसने भी अपने जीवन में समय का सदुपयोग किया है। एक एक क्षण को संजोकर तत्परता से उसको उसको गले लगाया है वही मनुष्य, महान कहलाने का अधिकृत हुआ है। पाश्चात्य विद्वान फ्रैंकलिन का कथन है “तुम्हें अपने जीवन से प्रेम है तो समय को व्यर्थ मत गँवाओ, क्योंकि जीवन इसी से बना है” इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि ईश्वर एक क्षण प्रदान करने के पूर्व ही दूसरा क्षण वापस ले लेता है जो फिर कभी भी हाथ नहीं आता। अस्तु, अपनी क्षमता को आँककर, पहचान कर समय रूपी बीज का अंकुरण अपने चाह रूपी खेत (हृदय) में धारण करके उसमें आशा की किरणों का संचार कर देने पर तो निश्चित ही फसल लहलहा उठेगी। अतः अपने मनोरूप लक्ष्य का निर्धारण कर पूर्ण मनस्विता से गन्तव्य की ओर निरन्तर अग्रसर होने में अवसर को कभी नहीं चूकना चाहिए। यह भी हमें सोचना चाहिए कि मृत्यु का आना अपरिहार्य रूप से सुनिश्चित है तथा वह कब आ जाये इसका कोई भरोसा नहीं। अतः जो वर्तमान काल चल रहा है। उसे ही सबसे अच्छा, सर्वोत्तम काल मानकर प्रतिदिन अपने जीवन के सुबह, दिन एवं रात को ईश्वर, प्रकृति

शेष पृष्ठ दो पर

शुभ नवरात्र

वर्ष भर में पारम्परिक रूप से सनातनी विधान के अनुरूप चैत्र नवरात्र यानी वासंतीक नवरात्र व शरद नवरात्र मनाया जाता है। शक्ति की अधिष्ठात्री सर्व ईश्वरी सर्वेश्वरी की ही उपासना दोनों नवरात्रों में शक्ति सम्बद्धन हेतु की जाती है। वासंतीक नवरात्र का प्रारम्भ हिन्दी नववर्ष के प्रथम दिन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है, जो इस वर्ष ८ अप्रैल २०१६ से प्रारम्भ है। यानी विक्रम संवत् २०७३ का प्रारम्भ एवं कलियुग का ५११८वाँ वर्ष प्रारम्भ हो रहा है। कहते हैं कि इसी दिन को ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की। नवरात्र में विशिष्ट साधना, अनुष्ठान का महत्व है। जिसमें साधारण जन कष्ट सहन में ही प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। प्रत्यक्ष, परोक्ष रूप से उपवास, ब्रह्मचर्य, मौन, शीलधारण, चरित्र विकास के अतिरिक्त नशा मुक्ति एवं अर्नगल प्रलापों के समन हेतु ही ऋषियों द्वारा इस पद्धति से शक्तिस्वरूपा सर्वेश्वरी की उपासना का विधान किया गया है। प्रत्येक छः माह के अन्तराल पर शारीरिक एवं मानसिक शुद्धि एवं बल-बुद्धि वृद्धि हेतु नवरात्र के प्रथम तिथि को विधानानुसार स्नानादि नित्य कर्म से निवृत्त होकर शुभ संकल्प लेकर गंध, अक्षत, पुष्प, रोरी के साथ सर्वप्रथम प्रकृति यानी ब्रह्म का आवाहन कर पूजन प्रारम्भ करते हैं, फिर आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, यज्ञोपवीत से युक्त कर श्रद्धा के साथ नैवेद्य, पुष्पांजलि अर्पित कर मंत्रोच्चारण के साथ शक्ति घट की स्थापना का विधान है। जिसमें प्राकृतिक रूप से गणपति एवं मातृका पूजन भी सम्पन्न हो जाता है। चैत्र नवरात्र में नवगौरी के रूप में तथा शरद नवरात्र में नवदुर्गा के रूप में माँ सर्वेश्वरी का ही आवाहन पूजा-पाठ, मंत्र-जप आदि के माध्यम से किया जाता है।

सन्तों द्वारा औषड़, अधोरेखर, खेपा, मलग, परमहंस सभी रूपों के द्वारा शक्ति की ही अर्चना, अभ्यर्थना की जाती है। औषड़, अधोरेखर को साक्षात् शिव एवं शिव के पर्याय के रूप में देखा जाता है जिनका जगत् में प्रभाव शक्ति सानिध्य के ही कारण है अन्यथा शिव को शक्ति के अभाव में शव तुल्य हो जाते हैं। इसीलिये “माँ सर्वेश्वरी त्वं पाहिमाम्” का उच्चारण कर हम सब पूरे मनोयोग एवं आत्मभाव से शक्ति की उपासना को उद्यत होते हैं। इसलिये परम पूज्य भगवान अवधूत राम जी के द्वारा जगहितार्थ प्रतिपादित अधोर वचन शास्त्र नामक ग्रन्थ का पहला अध्याय के शीर्षक का श्री गणेश “माँ” से किया गया है। इस प्रथम अध्याय के अन्तर्गत माँ के सभी रूपों को ऊर्जा के रूप में कण-कण में विराजमान कहा गया है। जिसे अपनाने हेतु पाने हेतु अनेक विधान का सहारा लेते हैं तथा अपने भावों को परिष्कृत कर जब आर्तभाव से जगद्जननी की पुकार करते हैं तो वे अनेकों रूप में होकर हमारी रक्षा करती हैं, वे हमारी उपासना, ध्यान, मांग के अनुरूप क्रिया, बुद्धि, शक्ति से युक्त कर देती हैं। हमें संवेदनशील, लज्जाशील बनाती हैं तथा क्षमा करने हेतु तत्पर रहती हैं। इसीलिये नवरात्र पूजा में भगवती को चारों दिशाओं में प्रणाम करने की परम्परा है। क्योंकि शक्ति से ही सृष्टि का सृजन है, पृथ्वी के चाहे जिस भूभाग पर जीवित प्राणी मौजूद हों उनका उद्गम उनकी माँ से ही है यानी शक्ति के अंश रूप जो लौकिक संसार में दृश्यमान है। फिर उस अलौकिक शक्ति के प्रभाव का क्या कहना, जो पूरे जगत में प्राणेश्वरी, अधोरेखरी, सर्वेश्वरी के विभिन्न रूपों में विराजमान होकर मनुष्य के भाग्य को संवारने हेतु उद्यत है।

परमपूज्य भगवान् अवधूत राम की वाणी के अनुसार “हे भगवती! मैं इस जीवन में आपसे कोई चीज नहीं माँगता। हमको इतना पूर्ण कर दें कि हमें किसी तरह का अभाव ही न रहे और यदि हममें अभाव नहीं हो जाता तो हम आपसे याचना ही नहीं करेंगे।”

C-अधोराचार्य बाबा कीनाराम अधोर शोध एवं सेवा संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक **अरुण कुमार सिंह** द्वारा महादेव प्रेस, बी.3/335, रविन्द्रपुरी कॉलोनी, भेलपुर, वाराणसी (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक : चन्द्र नाथ ओझा

ग्राफिक्स : आशीष कुमार बरनवाल

☎ 0542-2277155.

e-mail-kinaram@rediffmail.com

www.aghorpeeth.org

प्रथम पृष्ठ का शेष

का अनुदान समझते हुए पहल करनी चाहिए, जिससे हमें पश्चाताप की अग्नि के संताप झेलना नहीं पड़ेगा। यदि कभी भूल से समय नष्ट भी हो गया तो अगले क्षण पश्चाताप कर पुनरावृत्ति न करने का संकल्प लेकर पुनः समय के आलिङ्गन को सचेष्ट होना पड़ेगा। अतः योजना बनाकर आलस्य, प्रमाद रहित होकर किये गये प्रयत्न यानी समय का सच्चा, सार्थक सदुपयोग कभी व्यर्थ नहीं जाता क्योंकि जो अपने अतीत से अनुभव लेते हुए मात्र वर्तमान का भरपूर सदुपयोग करता रहेगा, आज के काल में जीता रहेगा। उसका भविष्य स्वर्णिम आभाओं से सदैव युक्त रहता है। परन्तु जो मात्र दिन में सुखद स्वप्न देखते रहते हैं उसके अनुकूल वर्तमान समय को अपने अनुरूप कर्म में नहीं ढालते, उनके स्वप्न मात्र श्रेयचिह्न ही सरीखा ही सिद्ध होता है। अस्तु, जीवन में अप्रत्याशित सूर्योदय के लिये, नवजागरण के लिए, नवजीवन के लिये एकमात्र विकल्प समझ आते हुए

समय

अवसर या समय को पहचान कर उसे आत्मसात हेतु अथक प्रयास करते रहना पड़ेगा। समय एक ऐसी कसौटी है जिस पर खरे उतारे बिना किसी को भी नहीं छोड़ा जाता, कहा जाता है कि बादशाह अकबर के जिज्ञासा पर विचारक बीरबल ने कहा कि अच्छे व बुरे दोनों में यह सदावक्य कहा जा सकता है “यह समय भी बीत जायेगा” यानी यदि समय विपरीत भी है तो भी उसकी चुनौती को मन से स्वीकार कर कर्मफल में संदेह करने से गुरेज करना ही श्रेयस्कर होता है। जैसा कि संत रहीम कवि कहते हैं—

**रहिमन चुप हैं बैठिये देख दिनन को फेर।
जब निके दिन आइहैं बनत न लगिहैं बेर।।**

इसी प्रकार कर्म करते हुए धैर्य धारण कर निश्चिन्त रहना चाहिए तथा बार-बार की असफलताओं से भी घबराना नहीं चाहिए। संत कहते हैं कि “धीरे धीरे रे मना

शेष पृष्ठ तीन पर

चैत्र नवरात्र प्रादम्भ

08 अप्रैल 2016	शुक्रवार	प्रथमा	दिन में 2.24 मिनट तक
09 अप्रैल 2016	शनिवार	द्वितीया	11.58 मिनट तक
10 अप्रैल 2016	रविवार	तृतीया	9.38 मिनट
11 अप्रैल 2016	सोमवार	चतुर्थी/पंचमी	प्रातः 7.29 तक/रात्रि 5.35 तक पंचमी
12 अप्रैल 2016	मंगलवार	षष्ठी	देर रात्रि 3.59
13 अप्रैल 2016	बुधवार	सप्तमी	देर रात्रि 2.46 मिनट तक
14 अप्रैल 2016	गुरुवार	अष्टमी	देर रात्रि 1.58 मिनट तक
15 अप्रैल 2016	शुक्रवार	नवमी	देर रात्रि 1.38 मिनट तक
16 अप्रैल 2016	शनिवार	दशमी	देर रात्रि 1.52 मिनट तक

(घट स्थापना 11.50 से 12.23 बजे तक)

(महानिशा पूजन 14.04.2016 गुरुवार रात्रि को मनाया जायेगा।)

पालनीय नियम

1. शील (ब्रह्मचर्य इन्द्रिय निग्रह) धर्म का पालन करें।
2. मौन (सन्तोष) रहें।
3. जमीन पर सोयें, अपने आसन पर न तो दूसरों को बैठें दें न तो सोने दें तथा दूसरे के आसन पर आप भी न बैठें।
4. तप से तामस वृत्ति की समाप्ति का प्रयास करें।
5. अल्पाहार (24 घण्टे में एक बार नियमित रूप से) करें।
6. इष्ट देवता का जाप करें।
7. इष्ट देवता का पाठ करें।
8. इष्ट देवता का ध्यान करें।
9. संकल्प विकल्प रहित चिन्त से रहें।
10. अपने शरीर एवं वाणी से कोई भी अपराध न करें।
11. किसी भी दिशा में इष्टदेव की अनुभूति कर साष्टांग करें।
12. माता, पिता, गुरु, तथा सज्जनों से नम्र व्यवहार करें।

तत्पश्चात् इन सभी क्रियाओं के फल को श्रीगुरु चरणों में अर्पित करें एवं जो फल प्राप्त हो, उसे इष्टदेवता को अर्पित करें। सदैव की भाँति अनुष्ठान कलशा स्थापना एवं अखण्ड दीप प्रज्वलित करें।

शेष पृष्ठ तीन पर

